21/10/17

मनुष्यता (कविता)

कवि- मैथिलीशरण गुप्त

संक्षिप्त परिचय- प्रस्तुत पाठ में कवि मैथिलीशरण गुप्त ने सही अर्थों में मनुष्य किसे कहते हैं उसे बताया है। कविता परोपकार की भावना का बखान करती है तथा मनुष्य को भलाई और भाईचारे के मार्ग पर चलने की सलाह देती है।

प्रश्न सं 1- 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर- 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि संसार में आकर मनुष्य स्वार्थरहित होकर दीन-हीन, निर्बल एवं जरुरत मंद लोगों की सेवा करते हुए ऐसे सत्कर्म करे, ताकि मृत्यु के बाद भी वह अमर हो जाए तथा 'मनुष्य मात्र बंधु है' इस तथ्य से अवगत होकर संसार के हर मानव के साथ मानवता का व्यवहार करे।

प्रश्न सं 2- 'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट करें।

उत्तर- इस कथन का अर्थ है कि संसार के सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं इसलिए हमें किसी से भी भेद-भाव नहीं करना चाहिए। सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं। अगर कुछ भेद दिखाई भी देते हैं, तो वे सभी बाह्य भेद हैं और वे भी अपने-अपने कर्मों के अनुसार दिखाई पड़ते हैं। मनुष्य मात्र बंधु है इसलिए 'वसुधैव कुटुम्बकम' का नारा बुलंद किया जाता है। प्रत्येक मनुष्य को हर निर्बल मनुष्य की पीड़ा दूर करने का प्रयास करना चाहिए। सभी आपस में भाईचारे की भावना से रहें तथा सभी में प्रेम एवं एकता का संचार हो।

प्रश्न सं०३– कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?
उत्तर– जो मनुष्य मानवता को सर्वोपरि धर्म मानता है तथा जिस मनुष्य में अपने और अपनों के हित चिंतन से पहले और सर्वोपरि दूसरों का हित चिंतन होता है और उसमें वे गुण होते हैं, जिनके कारण कोई मनुष्य मृत्युलोक से गमन कर जाने के बावजूद युगों तक दुनिया की यादों में बना रहता है, ऐसे मनुष्य की मृत्यु को ही कवि ने सुमृत्यु कहा है।

प्रश्न सं०४– उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?
उत्तर– उदार व्यक्ति की पहचान उसके सत्कार्यों, उसकी परोपकारिता तथा दूसरों के लिए अपना सर्वस्व त्याग देखकर की जा सकती है, अर्थात् उदार व्यक्ति के मन, वचन, कर्म से संबंधित कार्य मानव मात्र की भलाई के लिए ही होते हैं। यही उसकी पहचान है अथवा यही उसकी पहचान का माध्यम है।

प्रश्न सं०५– कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?
उत्तर– कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए यह संदेश दिया है कि प्रत्येक मनुष्य को परोपकार करते हुए अपना सर्वस्व त्यागने से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए। इन व्यक्तियों ने दूसरों की भलाई हेतु अपना सर्वस्व दान कर दिया था। दधीचि ने अपनी अस्थियों का तथा कर्ण ने कुंडल और कवच का दान कर दिया था। हमारा शरीर नश्वर है इसलिए इससे मोह को त्यागकर दूसरों के हित चिंतन में ही लगा देने में इसकी सार्थकता है। यही कवि ने संदेश दिया है।

प्रश्न सं०६– कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

उत्तर— कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त किया है कि हमें गर्व-रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए—

"रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में"

प्रश्न सं०7— कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

उत्तर— कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है क्योंकि एकता में ही बल होता है, जिससे हम संसार के किसी भी असंभव कार्य को कर सकते हैं। जीवन में आने वाली प्रत्येक विघ्न-बाधा पर विजय प्राप्त कर सकते हैं तथा जीवन रुपी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इससे भाई-चारे तथा सामाजिकता को भी बल मिलता है।

प्रश्न सं०8— व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? कविता के आधार पर लिखें।

उत्तर— व्यक्ति को सदा दूसरों की भलाई करते हुए, मनुष्य मात्र को बंधु मानते हुए तथा दूसरों के हित चिंतन के लिए अपना सर्वस्व त्यागकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे अपने अभीष्ट मार्ग की ओर निरंतर सहर्ष बढ़ते रहना चाहिए।

प्रश्न सं०9— भाव स्पष्ट करें—

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?

उत्तर— इन पंक्तियों का भाव है कि प्रत्येक मनुष्य को प्रत्येक मनुष्य के जीवन में समय-असमय आने वाले हर दुख-दर्द में सहानुभूति होनी चाहिए क्योंकि एक-दूसरे के दुख-दर्द का बोझ सहानुभूति की प्रवृत्ति होने से कम हो जाता है।

वास्तव में सहानुभूति दर्शाने का गुण महान पूँजी है। पृथ्वी भी सदा से अपनी सहानुभूति तथा दया के कारण वशीकृता बनी हुई है। भगवान बुद्ध ने भी करुणावश उस समय की पारंपरिक मान्यताओं का विरोध किया। विनम्र होकर ही किसी को झुकाया जा सकता है।

प्रश्न सं॰ 10- चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें धकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

उत्तर— इन पंक्तियों का अर्थ है कि मनुष्य को अपने निर्धारित उद्देश्य रुपी पथ पर प्रसन्नतापूर्वक विघ्न-बाधाओं से जूझते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए। इस मार्ग पर चलते हुए परस्पर भाई-चारे की भावना उत्पन्न करो, जिससे आपसी भेद-भाव दूर हो जाय। इसके अतिरिक्त बिना किसी तर्क के सतर्क होकर इस मार्ग पर चलना चाहिए, अर्थात रास्ते बेशक सभी के अलग हों, लेकिन आपस में मेल-जोल कभी कम नही होना चाहिए।

प्रश्न सं॰ 11- रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।

उत्तर— इन पंक्तियों का भाव है कि मनुष्य को कभी भी तुच्छ या नश्वर धन के लोभ में आकर अहंकार नहीं करना चाहिए अर्थात् धन के आजाने पर मनुष्य को इतराना नहीं चाहिए।

प्रश्न सं॰ 12- अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।

उत्तर— इन पंक्तियों का भाव है कि इस संसार में कोई भी त्रिलोकीनाथ के साथ होते हुए अनाथ नहीं है। उस दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं। वे सभी की सहायता हेतु दया बरसाने वाले हैं।

प्रश्न सं० 15- देवता मनुष्य को क्या प्रेरणा दे रहे हैं?
उत्तर- देवता मनुष्य को देवलोक में आने की प्रेरणा दे रहे हैं अर्थात् वे मनुष्य को परोपकार, दया, करुणा और मनुष्यता का जीवन जीकर अपना उत्थान करने की सीख दे रहे हैं। ऐसे व्यक्ति स्वयं ही देवता हो जाते हैं और लोग उनकी पूजा करते हैं।

प्रश्न सं० 16- पशु-प्रवृत्ति क्या है? क्या यह प्रवृत्ति मनुष्य द्वारा अपनाने योग्य है?
उत्तर— पशु-प्रवृत्ति से तात्पर्य है- सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए जीना, दूसरों की चिंता न करना ही पशुओं की प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति मनुष्य द्वारा अपनाने योग्य नहीं होती।

प्रश्न सं० 17- कवि ने भाग्यहीन किसे माना है?
उत्तर- कवि के अनुसार भाग्यहीन व्यक्ति वही है जो ईश्वरीय सत्ता में विश्वास नहीं करता, तथा जो ईश्वरीय कृपा को छोड़कर अधिक पाने के लिए अधीर रहता है, हमेशा अशांत रहता है, वास्तव में वही भाग्यहीन है।

प्रश्न सं० 18- वीर कर्ण के त्याग की क्या घटना थी?
उत्तर- वीर कर्ण ने महाभारत के युद्ध में कौरवों की ओर से लड़ाई लड़ी थी। उसे जन्मजात दैवीय कवच प्राप्त था। फिर भी अपने मृत्यु की परवाह न करते हुए अपना कवच दान में दे दिया।

प्रश्न सं 19- बुद्ध की दया का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर- बुद्ध की दया का लोगों पर जबरदस्त प्रभाव हुआ। वे बुद्ध के चरणों में नतमस्तक हो गए, वे विनम्र होकर उनके अनुयायी हो गए।
प्रश्न सं०20- सच्चा मनुष्य कौन है?
उत्तर- जो केवल अपने लिए नहीं जीता, अपितु सभी मनुष्यों के लिए जीता है, वही सच्चा मनुष्य है।

2- पर्वत प्रदेश में पावस
(कविता)

कवि- सुमित्रानंदन पंत

संक्षिप्त परिचय-

छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की यह कविता प्रकृति सौंदर्य की झलक प्रस्तुत करती है। इस कविता में पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा के दृश्य और उसके प्रभाव का मनोहारी चित्रण किया गया है।

प्रश्न सं०1- पावस ऋतु में पर्वत प्रदेश के प्राकृतिक सौंदर्य की क्या विशेषता है?

उत्तर- पावस ऋतु में पर्वतीय क्षेत्र में प्राकृतिक सौंदर्य क्षण-क्षण बदलकर नये रुप में दिखाई देता है। कवि को ऐसा लगता है मानो प्रकृति पल-पल अपना रुप बदल रही है। सामने विशालकाय पर्वत करधनी के समान दूर-दूर तक फैला है। उस पर हजारों फूल खिले हैं। वे फूल मानो पर्वत की आँखें हैं।

प्रश्न सं०2- ताल कैसे निर्मित हुआ? उसकी क्या विशेषता थी?

उत्तर- वर्षा का जल पहाड़ों से सिंचाई की ओर आते हुए एक तालाब के रुप पर्वत रुपी चरणों में एकत्रित हो गया। इसकी विशेषता यह है कि यह दर्पण की भाँति झलक रहा था और पर्वत फूलों रुपी आँखों से इसमें अपना महाकार निहार रहा था।

प्रश्न सं० उ- 'मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है?

उत्तर- 'मेखलाकार' शब्द का अर्थ है-मंडलाकार करधनी के आकार के समान। यह कटि भाग में पहनी जाती है। पर्वत भी मेखलाकार की तरह

लग रहा था, जैसे इसने पूरी पृथ्वी को अपने घेरे में ले लिया है। कवि ने इस शब्द का प्रयोग पर्वत की विशालता और फैलाव दिखाने के लिए किया है।

प्रश्न सं०4— 'सहस्त्र दृग सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?

उत्तर— 'सहस्त्र दृग सुमन' का अर्थ है— हजारों पुष्प रुपी आँखें। कवि ने इसका प्रयोग पर्वत पर खिले फूलों के लिए किया है। वर्षा काल में पर्वतीय भाग में हजारों की संख्या में पुष्प खिलते दिख रहे हैं। कवि ने इन पुष्पों में पर्वत की आँखों की कल्पना की है।
पर्वत अपने नीचे फैले तालाब रुपी नेत्रों के माध्यम से अपने सौंदर्य को निहार रहा है। कवि इसके माध्यम से पर्वत का मानवीकरण कर फूलों के सौंदर्य को चित्रित करना चाहता होगा।

प्रश्न सं०5— कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?

उत्तर— कवि ने तालाब की समानता दर्पण के साथ दिखाई है। कवि ने ऐसी समानता इसलिए की है क्योंकि तालाब का जल अत्यन्त स्वच्छ व निर्मल है। वह प्रतिबिंब दिखाने में सक्षम है। दोनों ही पारदर्शी, दोनों में ही व्यक्ति अपना प्रतिबिंब देख सकता है। तालाब के जल में पर्वत और उस पर लगे हुए फूलों का प्रतिबिंब स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

प्रश्न सं०6— शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए?

उत्तर— कवि के अनुसार वर्षा इतनी तेज और मूसलाधार थी कि ऐसा लगता था मानो तालाब में आग लग गई हो। चारो ओर कोहरा छा जाता है, पर्वत, झरने आदि सब अदृश्य हो जाते हैं। वर्षा के ऐसे भयंकर रुप को देखकर ही शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में धँसे प्रतीत होते हैं

प्रश्न सं०7— झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है?

उत्तर— झरने पर्वत के गौरव का गान कर रहे हैं। कवि ने बहते हुए झरनों की तुलना मोतियों की लड़ियों से की है। पहाड़ों की छाती पर बहने वाले झाग जैसे जल वाले झरने ऐसे मनोरम लगते हैं मानो वे झर-झर की ध्वनि करते हुए पर्वत की महानता का गुण गान कर रहे हैं। ये उत्साह एवं उमंग से ओत-प्रोत हैं।

प्रश्न सं०8— भाव स्पष्ट करें—

'ये टूट पड़ा भू पर अंबर'

उत्तर— मूसलाधार वर्षा होने लगी है। बादलों ने सारे पर्वत को ढँक लिया है। पर्वत अब बिलकुल दिखाई नहीं दे रहे। ऐसा लगता है मानो आकाश ही टूटकर धरती पर आ गिरा हो। पृथ्वी और आकाश एक हो गए हैं। अब बस झरने का शोर ही शेष रह गया है।

प्रश्न सं०9— 'यों जलद यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल'

उत्तर— पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु में पल-पल प्रकृति के रूप में परिवर्तन हो जाता है। कभी गहरा बादल, कभी तेज वर्षा व तालाबों से उठता धुआँ। ऐसे वातावरण को देखकर लगता है मानो वर्षा का देवता इंद्र बादल रुपी यान पर बैठकर जादू का खेल दिखा रहा हो। आकाश में उमड़ते-घुमड़ते बादलों को देखकर ऐसा लगता था जैसे बड़े-बड़े पहाड़, अपने पंखों को फड़फड़ाते हुए उड़ रहे हों। बादलों का उड़ना, चारो ओर धुआँ होना और मूसलाधार वर्षा का होना ये सब जादू के खेल के समान दिखाई दे रहे थे।

प्रश्न सं० 10- पर्वत, ताल, निर्झर, वृक्ष, बादल के सौंदर्य का चित्रण कवि ने किस प्रकार किया है?
उत्तर— कवि ने पर्वत को एक बड़े राजा के समान, ताल को उसकी सेवा में चरणों में पलनेवाला और दर्पण के समान, झरनों को पहाड़ के गौरव का गान करने-वाला बताया है। वृक्ष राजा की महत्त्वाकांक्षाओं के प्रतीक हैं। बादल आकाश की नीलिमा के समान सभी कुछ को घेर लेनेवाले के रूप में चित्रित है।

प्रश्न सं० 11- पर्वत की चोटियों पर वृक्ष कैसे प्रतीत होते हैं?
उत्तर— वर्षा ऋतु में वृक्ष ऐसे लगते हैं मानो पहाड़ों का सीना फाड़कर उगे हों और मन में नई आकांक्षाएँ लिए स्थिर तथा चिंतामग्न होकर मौन रूप से आकाश को निहार रहे हों।

प्रश्न सं० 12- ताल के धुएँ का रहस्य स्पष्ट कीजिए।
उत्तर— कवि को पहाड़ों के चरणों तले बने ताल में उठता कोहरा ऐसे प्रतीत होता है मानो ताल में आग लग गई हो और धुआँ उठ रहा हो।

प्रश्न सं० 13- 'पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश से कवि का क्या तात्पर्य है?
उत्तर— प्रस्तुत पंक्ति से आशय है कि पर्वतीय स्थलों पर बादलों और धूप की आँख मिचौनी के कारण प्रकृति पल-पल अपना रूप बदल लेती है।

प्रश्न सं० 14— पर्वत की आँखें किसे कहा गया है?
उत्तर— पर्वत पर उगे हजारों-हज़ारों फूलों को पर्वत की आँखें कहा गया है।

प्रश्न सं० 15– पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं? स्पष्ट करें।

उत्तर– पावस ऋतु में प्रकृति में पल-पल बहुत से मनोहारी परिवर्तन आते हैं–

(i) पर्वत, ताल, झरने आदि भी मनुष्यों की ही भाँति भावनाओं से ओत-प्रोत दिखाई देते हैं।

(ii) पर्वत ताल के जल में अपना महाकार देखकर हैरानी से देखता है।

प्रश्न सं० 16– कविता के साहित्यिक सौंदर्य को स्पष्ट करें।

उत्तर– कविता का साहित्यिक सौंदर्य–

कविता में अनेक शब्दों की आवृति होने के कारण पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार की छटा छाई है जो कविता में नाद सौंदर्य, गति व उमंग पैदा करती है। कविता की भाषा चित्रात्मक है, यथा- मोती की लड़ियों से सुंदर, झरते हैं झाग भरे निर्झर आदि पढ़ते ही आँखों के समक्ष चित्र उभर जाता है।

प्रश्न सं० 17– बादलों से पर्वत छिप जाने पर कवि ने क्या कल्पना की है?

उत्तर– जो पर्वत अभी दिखाई दे रहा था, वह अभी न जाने कहाँ गायब हो गया। लगता है कि पर्वत बादलों के पंख लगाकर गायब हो गया है।

प्रश्न सं० 18– प्राकृतिक दृश्यों को कवि ने इन्द्रजाल क्यों कहा है?

उत्तर– वर्षा ऋतु में होने वाले परिवर्तन जादुई हैं, इसीलिए कवि ने इन्हें इन्द्रजाल की संज्ञा दी है।

प्रश्न सं० 19– 'रव शेष रह गए हैं निर्झर' का अर्थ है?

उत्तर– इसका अर्थ है कि झरने की आवाज के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं पड़ रहा।

प्रश्न सं० 20– कवि एवं कविता का नाम लिखें।

उत्तर– पर्वत प्रदेश में पावस, सुमित्रानंदन पंत।